उत्तरी स्पेन
अप्रैल ०४, २००३

सन्देश संख्या ५४

स्पेनिश पत्रिका 'यूनो मिस्मो' में छपा एक साक्षात्कार

(उत्तरी स्पेन के सैन्टियागो डी कम्पोस्टेला ऑफ गैलीसिया स्थित पवित्र कैथेड्रल से दिनांक ०४–०४–२००३ को जारी किया गया, हालाँकि यह साक्षात्कार पहली बार जनवरी, २००३ में श्री शिवेन्दु लाहिड़ी के चिली भ्रमण के अवसर पर मारिया एलेना डोनोसो द्वारा सान्टियागो, चिली (दक्षिण अमेरिका) से स्पैनिश भाषा में प्रकाशित पत्रिका 'यूनो मिस्मो' में छपा था।)

१–जो ज्ञान आप लोगों के बीच बाँट रहे हैं उसका वर्णन कैसे करेंगे?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– मैं कोई ज्ञान नहीं देता हूँ। मैं इसका सम्प्रेषण भी नहीं करता क्योंकि ज्ञान सदैव अपरागत (दूसरों से आया हुआ) होता है। ज्ञान का सम्बन्ध दूसरों से है जबकि 'जानना' स्वयं से सम्बन्धित है। आपके शरीर में दो 'अहम्' हैं : एक अवैयक्तिक (व्यक्तिविहीन) अहम् जो अनात्म (निरात्म) है। यह एक अस्तित्वात्मक चितिशक्ति है जो सार्वभौम है। यह शरीर के कारण एक दूसरे से भिन्न प्रतीत होता है। शरीर एक अद्वितीयता प्रदान करता है जिसमें सार्वभौमिकता भी निहित हो सकती है, बशर्ते वह वैयक्तिक अहम् अर्थात् अहंकार अर्थात् अवधारणात्मक अहम् न हो। हम समाज के द्वारा एक व्यक्ति के रूप में पहचाने एवं प्रोत्साहित किये जाते हैं तथा अपने ''मैं–पने'' (अहंकार) को दर्प तथा आक्रामकता के साथ प्रदर्शित/प्रस्तुत करते हैं। ऐसा हमारे अनुबन्धन, पालन–पोषण तथा मानसिक निवेश के कारण होता है। किन्तु, हम व्यष्टि नहीं, समष्टि हैं, वस्तुतः ''व्यष्टि'' का मूल अर्थ है – जिसे विभक्त नहीं किया जा सकता है, जिसे दूसरों से पृथक नहीं किया जा सकता है। दुर्भाग्य से, स्वार्थपरता के कारण इसका अर्थ विकृत कर दिया गया है। अब ''व्यक्ति'' का अर्थ है एक अहंकेन्द्रित और स्वार्थी मानव।

मैं लोगों को स्वयं के लिए स्वयं के द्वारा 'जानने' के लिए प्रोत्साहित करता हूँ क्योंकि 'जानना' ही स्वयं का अपना है। ज्ञान दूसरों से प्राप्त उधारी वस्तु है।

मेरा सन्देश है – स्वयं की बिना शर्त पूर्ण एवं परम मुक्ति का। यह मुक्ति स्वयं के लिए नहीं बल्कि स्वयं से है। दूसरे शब्दों में, यह वैयक्तिक अहं से मुक्त होकर व्यक्तित्वविहीन आत्म (अनात्म) का उदय है। यह 'जानना' संप्रेषित नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह प्रसार या प्रचार का विषय नहीं है। यह जागृति की अवस्था, एक प्रक्रिया है। यह देह अर्थात् जीवन को मन की गलाघोंटू पकड़ से मुक्त करना है। इसलिए शिवेन्दु के पास लोगों को देने या संप्रेषित करने के लिए कोई ज्ञान नहीं है। मेरा आग्रह मात्र इतना है कि लोग पूर्ण जाग्रत होकर 'जानने' की प्रक्रिया में लगे रहें।

२–क्या इस प्रक्रिया से सम्बन्धित कोई दर्शन है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– शिवेन्दु ऐसे किसी दर्शन से सम्बन्ध नहीं रखते हैं जो समझदारी की अद्भुत ऊर्जा के माध्यम से रक्त कोशिकाओं तथा अस्थिमज्जा में सत्य के प्रत्यक्षबोध के स्थान पर केवल सत्य सम्बन्धी विचारों, धारणाओं और अवधारणाओं में उलझे रहते हैं। दर्शनशास्त्र में समझदारी मात्र बौद्धिक वस्तु अर्थात् सुविधाजनक धारणाओं तथा आरामदेह अटकलबाजियों को स्वीकार कर उसमें लगे रहना है। क्रियायोग का अभ्यास जीवन की समझदारी की ऊर्जा को संचित करता है।

३–क्या क्रियायोग धर्म है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– क्रियायोग विज्ञान है, यह आभ्यन्तर सत् (अस्तित्व) का विज्ञान है। यह बहिर्मुखी अवधारणाओं से अन्तर्दृष्टि की ओर वापसी की यात्रा है। यह शरीर को स्वस्थ रखने वाला व्यायाम नहीं है। यह आत्मसम्मोहन अथवा आत्मसुझाव का कार्यक्रम भी नहीं है। हिन्दुओं ने इस क्रियायोग विज्ञान को दुनिया के सामने लाया किन्तु यह हिन्दू धर्म नहीं है। भौतिक विज्ञान ईसाइयों के द्वारा दुनिया के समक्ष लाया गया परन्तु भौतिकशास्त्र ईसाइयत नहीं है। इसलिए क्रियायोगी के लिए परमहंस और स्वामी की उपाधि अनावश्यक है। इस प्रकार की समस्त उपाधियाँ मात्र निर्भरता उत्पन्न करती हैं जो चेतना का भयजनित एक दूसरा प्रदूषण है।

हम आइन्सटीन को परमहंस आइन्सटीन नहीं कहते हैं। उसी तरह योगीजन को लोगों पर प्रभाव डालने के लिए कोई उपाधि धारण करने की आवश्यकता नहीं है। योग समस्त उपाधियों से मुक्त है। यह एक विज्ञान है, इसलिए कोई उपाधि आवश्यक नहीं है।

४–क्रियायोग में किस प्रकार की तकनीक शामिल है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– तकनीकें वह पात्र हैं जिसमें गूढ़ सत्य का वास है। तकनीकें दीक्षा के पावन वातावरण में सिखाई जाती हैं, जो सूचना नहीं बल्कि एक रूपान्तरण है। इसलिए ये तकनीकें यत्र–तत्र क्लब वार्ता के रूप में व्यक्त नहीं की जा सकती हैं।

५–क्रियायोग अभ्यास के पूर्व क्या लोगों का योग जानना आवश्यक है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– योग जिस रूप में सर्वत्र प्रचलित है, वह मात्र शारीरिक कसरत है। क्रियायोग इस प्रकार की कोई चीज नहीं है। इसलिए क्रियायोग सीखने के लिए योग, जैसा लोगों द्वारा समझा जा रहा है, जानने की आवश्यकता नहीं है।

६–क्रियायोग की दीक्षा प्राप्त करने तथा उसका अभ्यास करने के लिए कौन पात्र है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– जो कोई भी सतही जीवन से पीछा छुड़ाकर गहन गंभीर जीवन की ओर लौटना चाहता है, वह क्रियायोग की दीक्षा प्राप्त कर उसका अभ्यास कर सकता है। मन की सीमा से बँधे रहना या उसमें उलझे रहना जीवन नहीं है। यह मन के प्रभावक्षेत्र में मोहित रहना भी नहीं है।

७–क्रियायोग के अभ्यास के लिए क्या कोई पूर्वापेक्षित गुण है? क्या इसमें विश्वास–पद्धति की कोई भूमिका है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– उत्तम मस्तिष्क एवं समझदारी की ऊर्जा अपेक्षित गुण हैं। इसके बिना क्रियायोग भी एक विश्वास–पद्धति ही होगी जिसमें वे सारे बन्धन रहेंगे जो दूसरी विश्वास–पद्धतियों में हैं। क्रियायोग विश्वास–पद्धति को मुक्ति के एक उपकरण में परिवर्तित कर देता है।

८–किसी के जीवन में क्रियायोग दीक्षा का क्या अर्थ है? क्या इसका यह आशय है कि आप दीक्षित व्यक्ति के गुरू हो जाते हैं? क्या दीक्षा के पश्चात् उस व्यक्ति के साथ आप कोई सम्बन्ध या सम्पर्क बनाये रखते हैं? क्या इसमें दोनों पक्षों के बीच किसी प्रकार की वचनबद्धता होती है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– क्रियायोग अवधारणामूलक गतिविधियों के साथ प्रत्यक्षबोध की क्रियाओं के मध्य समन्वय है। यह व्यक्ति के जीवन को चित्तवृत्ति के हस्तक्षेप से मुक्त करता है। क्रियायोग में गुरू अन्धकार को दूर करने वाला है न कि बन्धन या बोझ। क्रियागुरू अपने शिष्यों या व्यक्तियों को ठीक ढंग से सुव्यवस्थित (अव्यवस्था की समाप्ति) देखना चाहता है पर रोब नहीं जमाता। तकनीकी शिक्षा में १+१=२ होता है। उदाहरण के लिए एक अभियान्त्रिकी का शिक्षक एक दूसरा अभियन्ता तैयार करता है किन्तु आध्यात्मिक शिक्षा में १+१=० हो जाता है क्योंकि जब सत्य को समझ लिया जाता है, तब गुरू और शिष्य के मिथ्याभिमान और निहित स्वार्थ मिट जाते हैं। अर्थात् गुरू और शिष्य दोनों अवैयक्तिक अनात्म हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्तिगत सम्बन्धों का कोई अर्थ या महत्व नहीं रह जाता है। करुणा और बोध अधिक महत्वपूर्ण हैं वनिस्पत प्रतिबद्धताओं एवं निष्कर्षों के।

९–यह ज्ञात है कि क्रिया अभ्यास का प्रत्यक्ष एवं दृगिम्य प्रभाव होता है। इन प्रभावों को किस तरह संभालना चाहिए? ये प्रभाव क्या हैं?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– क्रियायें प्रयोग और अनुसंधान के लिए हैं। इसके लिए किन्हीं पूर्व धारणाओं और पूर्व निर्धारित निष्कर्षों की आवश्यकता नहीं है। प्रभावों के सम्बन्ध में मानसिक अटकलबाजियाँ क्रिया के परमानन्द एवं मंगल को न कर देती हैं।

१०–ऐसा प्रतीत होता है कि क्रियायोग का अभ्यास शरीर और मानसिक ऊर्जा में सामंजस्य एवं संतुलन उत्पन्न करता है। क्या यह प्रभाव कुछ हद तक मन को लय की ओर ले जाता है? क्या यह लय यथार्थ आत्मा, हमारे सच्चे स्वरूप का अनुभव कराता है? क्या यह अभ्यास हमारे वैयक्तिक और आध्यात्मिक विकास की गति को बढ़ाता है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– मन के लय का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि मन जैसी कोई चीज वास्तव में है ही नहीं। मन का अस्तित्व नहीं है। यह एक कल्पना (मिथक) है। यह यथार्थ नहीं है बल्कि मान्य है, क्योंकि इसकी हमारे दैनिक जीवन में उपयोगिता है। यद्यपि मन दैनिक कार्य व्यापार के संचालन

हेतु क्रियाशील रह सकता है तथापि मन से मुक्त होना संभव है। क्रियायोग सामंजस्य नहीं बल्कि शरीर में एक रूपान्तरण, एक प्रकार का रासायनिक परिवर्तन है। यथार्थ आत्मा अनुभव नहीं अस्तित्व है। क्रियायोग एक क्रमिक विकास नहीं वरन् एक आमूल परिवर्तन (विस्फोट, क्रान्ति) है।

११—क्या ऊपर वर्णित प्रक्रिया में श्वास क्रिया की भूमिका है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— क्रिया प्राणायाम श्वास क्रिया का सर्वाधिक गहन रूप है जो मन में आश्चर्यजनक स्थिरत्व उत्पन्न करता है।

१२—औसत मनुष्य अस्तित्व के यथार्थ स्वरूप के प्रति जागरूक नहीं है। क्या आप कहेंगे कि मन इसका कारण है? क्या मन ही हमारे अहंकार अर्थात् वैयक्तिकता के भाव को उत्पन्न करता है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— मन विभेदकारी चित्तवृत्ति है। यह खण्ड चैतन्य है। इसीलिए यह हमें पूर्ण चैतन्य से पृथक एवं वियुक्त कर देता है। मन बुद्धि का प्रदूषण है और अहंकार मन का विकार।

१३—क्या आप इसकी व्याख्या कर सकते हैं कि मानव अस्तित्व क्यों मन के बन्धन में है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— मानव अस्तित्व मन से बँधा हुआ नहीं है बल्कि मानवीय अनुभव मन से आबद्ध है। मन के मूल घटक हैं लालसा, भय, निर्भरता और आसक्ति।

१४—'निर्मन' क्या है? क्या यह एक अवस्था है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— 'निर्मन' नूतन मन है जिसमें मन की समस्त नकारात्मकताओं को नकार दिया जाता है। यह मन से परे एक शुद्ध चैतन्य है।

१५—हम लोगों के अत्यधिक भय के अनुभव का क्या कारण है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— भय वास्तव में माँग, इच्छा, चाह, लालसा, आशा, अपेक्षा, आकांक्षा, अटकलबाजी, आदि का प्रत्यक्ष परिणाम है।

१६—क्या आप चिति—शक्ति एवं प्रज्ञा की व्याख्या कर सकते हैं?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— बुद्धि मन से सम्बन्धित है और चिति—शक्ति 'निर्मन' से। ज्ञान का सम्बन्ध मन से है जबकि प्रज्ञा का सम्बन्ध 'निर्मन' से है।

१७—कृपया हमें महावतार बाबाजी के विषय में बतायें, वे कौन हैं?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— बाबाजी एक रहस्य हैं। इस क्रियायोग वंश—परम्परा में चमत्कार प्रदर्शन या उसके प्रचार को प्रश्रय नहीं देते इसलिए हम सार्वजनिक रूप से बाबाजी के बारे में बात नहीं करते हैं। परन्तु क्रियावानों (क्रियावान वह है जो क्रिया का अभ्यास करता है) के मध्य व्यक्तिगत वार्ता समूहों में बाबाजी से संबंधित अत्यन्त गूढ़ सत्य की चर्चा करते हैं।

१८—आप की दृष्टि में लाहिड़ी महाशय क्या थे?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— सांसारिक रिश्ते के अनुसार वे मेरे प्रपितामह थे। इसके साथ वे अनेक प्रक्रियायें और प्रत्यक्षबोधों, जो कि अनाम और अपरिमेय हैं, की प्रतिमूर्ति थे।

१६—भारत में क्रियायोग शिक्षा की क्या कोई दूसरी परम्परा अथवा विचारधारा है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— भारत और विदेश में इसकी अनेक 'शिष्य' परम्परायें अब भी क्रियाशील हैं।

२०—क्या भारत स्थित आपके मन्दिर में कोई अभ्यास कार्यक्रम होता है? जिन लोगों की क्रियायोग सीखने और अभ्यास करने में रूचि है क्या उनके लिए वहाँ ठहरना संभव है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— हाँ, किन्तु वर्ष में केवल तीन बार — जनवरी, जुलाई और अक्टूबर — जिसमें क्रमशः मेरे पिता, गुरू पूर्णिमा (गुरू का पर्व) तथा लाहिड़ी महाशय की पुण्य तिथि पड़ते हैं। वाराणसी में मन्दिर के साथ संयुक्त एक छोटा आवासीय भवन है। उपलब्ध आवास केवल भारतीयों के लिए अनुकूल है क्योंकि इसमें उपलब्ध सुविधायें पाश्चात्य जीवन—शैली के योग्य नहीं हैं। किन्तु इसके आस—पास होटल और मोटल उपलब्ध हैं जो पश्चिम के निवासियों के लिए सुविधाजनक हो सकते हैं।

२१—क्या आपके शिष्य हैं?

शिवेन्दु लाहिड़ी :— अब तक (२६ मार्च, २००३ तक) ७,४६३ लोग विश्वभर में शिवेन्दु लाहिड़ी से दीक्षा ले चुके हैं। वे सामान्यतः अपने को शिष्य कहते हैं। कुछ धूर्त लोग भी हैं जो इसे स्वीकार नहीं करते हैं और शिवेन्दु लाहिड़ी को क्षति पहुँचाना चाहते हैं।

२२–आप उन लोगों को क्या सलाह देंगे जो आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की आवश्यकता महसूस करते हैं?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– मैं सलाह नहीं देता, न नैतिक आज्ञापत्र जारी करता और न ही उपदेश देता हूँ। आध्यात्मिक पथ के पथिक के लिए मेरा सुझाव हैः ''तथाकथित आध्यात्मिक पुस्तकों के अध्ययन से अपने मस्तिष्क को प्रदूषित न करें क्योंकि उनमें से अधिकांश सुन्दर और लुभावने झूठ, पालन–पोषण, पढ़ाई लिखाई तथा कारोबार की पृष्ठभूमियों की अनुबन्धित प्रतिक्रियाओं, हास्यजनक कहानियों तथा अनुमानों से भरी पड़ी हैं।''

२३–आपके विचार से आध्यात्मिक प्रक्रिया के अन्तर्गत सबसे अधिक सार्थक दृष्टिकोण क्या है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– शिवेन्दु लाहिड़ी का मत–अभिमत से कोई सम्बन्ध नहीं है। मत और मनोग्रस्तता दृष्टि को धूमिल कर देते हैं। आध्यात्मिक प्रक्रिया के दौरान क्रियावान के दृष्टिकोण को क्रियायोग की दीक्षा के समय लययोग के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है जिसमें तीन भाव हैं – अतिथिभाव, साक्षीभाव और समाप्तिभाव।

१. अर्थात् अतिथि की तरह जीवनयापन करना।

२. अर्थात् विकल्परहित जागरूकता के द्वारा साम्यावस्था प्राप्त करना।

३. अर्थात् बुराई के विरोधीभाव को पैदा कर एक बनावटी अच्छाई को गढ़ने की अपेक्षा बुराई की समाप्ति करने को अधिक महत्व देना क्योंकि गढ़ी हुई अच्छाई अन्ततोगत्वा बुराई से भी बुरी है।

२४–यदि कोई आपसे सम्पर्क करना चाहता है तो वह कैसे सम्भव है?

शिवेन्दु लाहिड़ी :– विभिन्न देशों के समन्वयकों के माध्यम से मुझसे सम्पर्क किया जा सकता है। आप मुझसे मुख्य समन्वयक श्री डीट्रिच होल्ट्ज के द्वारा संचालित वेबसाईट एचटीटीपीः//डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.क्रियायोग.कॉम और उनके ई–मेल पता इन्फो.क्रियायोगलाहिड़ी.कॉम के माध्यम से सम्पर्क कर सकते हैं।

सभी को आशीर्वाद तथा बहुत–बहुत प्यार,

।। प्राचीन ऋषि पतंजलि की जय ।।